किताबें मिलीं

मनोज मोहन

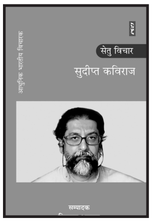

हिलाल अहमद के संपादन में आधुनिक भारतीय विचारक शृंखला में पहली किताब सुदीप्त कविराज पर आई है। सुदीप्त कविराज की प्रतिष्ठा बौद्धिक इतिहास और भारतीय राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र में अप्रतिम है। यहाँ उनके अंग्रेज़ी में लिखे महत्त्वपूर्ण लेखों के अनुवाद का एक संचयन तैयार किया गया है। इस किताब की भूमिका में हिलाल अहमद सुदीप्त कविराज का बौद्धिक परिचय देते हैं, साथ ही उनके लिखे लेखों और निबंधों को समझने की कुंजी भी देते हैं। किताब के चार खंड हैं और नौ अध्याय हैं। मार्क्सवाद, ग्राम्शी और भारत पहला खंड है। इसके पहले अध्याय में ग्राम्शी और विभिन्न तरह के विभेद पर चर्चा है तो दूसरे अध्याय में निष्क्रिय क्रांति की पड़ताल की गयी है। दूसरे खंड में उपनिवेशवाद की सैद्धांतिकी और भारत-विमर्श पर गंभीर चर्चा है। चौथे खंड में मात्र एक ही अध्याय है और उसका शीर्षक है—साहित्य और सियासत का भारतीय तसव्वुर। इस किताब को पढ़ने में अड़चन न पैदा हो इसलिए किताब के संपादक ने हर लेख के पहले संपादकीय टिप्पणी दी है। एक सामान्य पाठक के लिए यह टिप्पणी एक ज़रूरी उत्प्रेरक की भूमिका में है।

आधुनिक भारतीय विचारक : सुदीप्त कविराज
संपादक : हिलाल अहमद
सेतु प्रकाशन, नोएडा, उत्तर प्रदेश
मूल्य : ₹ 599, पृष्ठ : 320

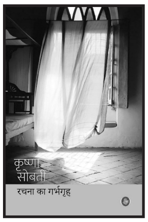

कृष्णा सोबती हमारे समय की बड़ी लेखिका रही हैं। उनके न रहने पर आर. चेतनक्रांति ने उनकी रचना-प्रक्रिया से संबंधित सभी लेखों को एकत्र कर किताब का नाम दिया—रचना का गर्भगृह। चेतनक्रांति भूमिका में लिखते हैं कि उनका हर क्षण लेखकीय है। दिन में ग्यारह बजे जगकर अगले दिन के चार बजे सोने तक। इस दौरान वे सिर्फ़ लेखक होती हैं—टीवी देखते हुए, अख़बार पढ़ते हुए, किताबें पढ़ते हुए, फ़ोन पर लोगों से बात करते हुए, और अपने एकदम आसपास की दुनिया से इंटेरेक्ट करते हुए। अब वो इस दुनिया में नहीं हैं। सिर्फ़ उनका लिखा विपुल साहित्य हमारे समक्ष है। वो इसी किताब में कहती हैं कि मेरे पास लेखक के रूप में केवल आठ पुस्तकों की दौलत है। रचना के गर्भगृह शीर्षक लेख के शुरू में ही वे अपनी बात इस तरह रखती हैं—रचना का गर्भगृह, रचना के पाताल में जिसे लेखक को खोजना पड़ता है। रचना की तासीर उसकी बनावट और बुनावट जो पहली पंक्ति में जनमती है वह अपने कलात्मक गुण-गूँथ और सत्य की समग्रता में अपनापन अर्जित करती हैं। कृष्णा सोबती मानती हैं कि लेखक उसका सर्जक है लेकिन वह उसका लिप्यंतरण नहीं करता।

रचना का गर्भगृह
कृष्णा सोबती
संकलन-संपादन : आर. चेतनक्रांति
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹ 250, पृष्ठ : 144

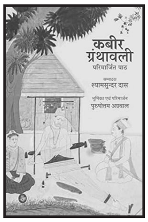

कबीर की महिमा का कारण यह है कि उनकी कविता भीतर-बाहर के सबद-निरंतर को धारण करती है। हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में वर्षों के शोध-अनुसंधान का प्रतिफल है 'कबीर ग्रंथावली : परिमार्जित पाठ' का प्रकाशन। बीसवीं सदी की दूसरी दहाई में श्यामसुन्दर दास ने कबीर ग्रंथावली का संपादन किया था, जिसमें पाठ की समस्या के साथ-साथ प्रूफ़ की ग़लतियाँ और संपादन की अनावश्यक भूलें थीं, जिसे नागरी प्रचारिणी सभा को

23Manoj Mohan_Layout 1 08-02-2024 18:48 Page 479

बहुत पहले दूर कर लेना चाहिए था। लगभग नौ दशक तक कबीर ग्रंथावली को इन्हीं त्रुटियों के साथ देश-विदेश में पढ़ाया जाता रहा। प्रसिद्ध आलोचक और कबीर विशेषज्ञ पुरुषोत्तम अग्रवाल के वश में ही था इसके परिमार्जन का श्रमसाध्य काम करना, जो उन्होंने मनोयोगपूर्वक किया। अब यह ग्रंथावली निर्दोष होकर प्रकाशित हो पाई। सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि किताब की 165 पन्नों की भूमिका भी उन्होंने लिखी। जिससे कबीर के पाठों के संकलनों, कबीर को लेकर होने वाली राजनीति, कबीर की परंपरा, उनके प्रभावों को लेकर एक नया विमर्श कबीर के पाठकों के समक्ष उपस्थित हुआ।
यह एक ऐसी किताब है जो आने वाले लंबे समय तक प्रामाणिक पाठ के रूप में पढ़ी और पढ़ाई जाएगी।

कबीर ग्रंथावली : परिमार्जित पाठ
भूमिका एवं परिमार्जन : पुरुषोत्तम अग्रवाल
राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली
मूल्य : ₹ 499, पृष्ठ : 480

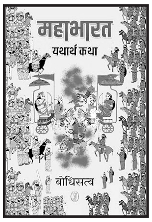

इस किताब में बोधिसत्व अपनी प्रखर विश्लेषण दृष्टि से एक नया पाठ प्रस्तुत करते हैं। यह सत्य है कि महाभारत में सादगी और सरलता किसी भी प्रसंग में अपेक्षित नहीं है। यहाँ कुछ भी छुपाकर नहीं रखा गया है, बल्कि अपने वर्णन में व्यास निर्मम और क्रूर माने जा सकते हैं। लेखक अपने पाठकों को भरोसा देते हैं कि किसी घटनाक्रम को संपूर्णता में देखना हो तो महाभारत के कथा-वन में प्रवेश करें। बोधिसत्व की यह पुस्तक पौराणिक आख्यानों को एक नये धरातल पर खड़े होकर देखने के लिए आमन्त्रित करती है, जहाँ कथा का सत्य और अर्धसत्य अपने निर्मल यथार्थ के साथ स्पष्ट दिखने लगता है! बोधिसत्व के पक्ष का एक प्रतिपक्ष भी है। महाभारत के सत्य का संधान लगभग दो हज़ार वर्षों से किया जाता रहा है, फिर भी यह पुस्तक महाभारत की यथार्थ कथा का नये सिरे से उद्घाटन करती है।

महाभारत : यथार्थ कथा
बोधिसत्व
वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
मूल्य : ₹399, पृष्ठ : 248

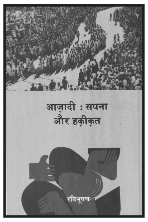

आज़ादी : सपना और हक़ीक़त समाज-चिंतक और लेखक रविभूषण के 2006 से 2023 के बीच विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिखी टिप्पणियों का संग्रह है। गांधी जिस अंतिम व्यक्ति के विकास की बात कर रहे थे, उन्हें आज़ादी मिलने के कुछ ही महीने के भीतर निपटा दिया गया था। इसके बावजूद भले यह लोगों को अधूरा सच लगे या झूठा सच लगे लेकिन सच यही है कि हम भारत के लोग गांधी-विचार से दूर नहीं जा सकते। किताब की संक्षिप्त भूमिका में लेखक अपना मंतव्य साफ़ शब्दों में रखते हैं। सभी लेख आज़ादी से सम्बन्धित नहीं हैं, पर किसी-न-किसी रूप में सबका उस आज़ादी से संबंध है, जो जनता को अब तक हासिल नहीं हुई है। दलित, स्त्री, आदिवासी कई अर्थों में आज पचहत्तर सालों बाद भी पराधीन हैं। इस निष्कर्ष को रविभूषण अपने बौद्धिक तर्क से सिद्ध करते हैं।

आज़ादी : सपना और हक़ीक़त
रविभूषण
अभिधा प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य : ₹ 350, पृष्ठ : 288

1973 से 2021 के अप्रैल माह तक 'इस महादेश के वैज्ञानिक विकास के लिए प्रस्तुत प्रगतिशील रचनाओं की अनिवार्य पुस्तक' के टैगलाइन के साथ पहल के कुल 125 अंक प्रकाशित हुए। कर्मेंदु शिशिर ने पहल पत्रिका में प्रकाशित सारी सामग्री को एकत्रित कर एक उपादेय सूची बनाई है। पहल और ज्ञानरंजन में 125 अंकों की अनुक्रमणिकाएँ ही नहीं हैं, बल्कि पत्रिका में छपी सारी सामग्री का विधानुसार शीर्षकों-उपशीर्षकों में सार्थक वर्गीकरण किया गया है जो किसी भी पाठक और अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। सरस्वती, कल्पना और आलोचना की विवरणिकाएँ मौजूद हैं और इनमें पहल की विवरणिका का प्रकाशन करके जर्मनी के ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय ने अच्छा काम किया है। हम उनसे कर्मेन्दु जी द्वारा दी गई सामग्री के शीघ्र डिजिटाइज़ेशन की भी उम्मीद रखते हैं।

पहल और ज्ञानरंजन
कर्मेंदु शिशिर
अनन्य प्रकाशन, नवीन शाहदरा, दिल्ली
मूल्य : ₹ 550, पृष्ठ : 198

23Manoj Mohan_Layout 1 08-02-2024 18:48 Page 480

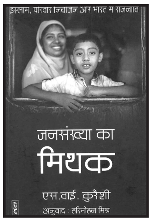

एस.वाय. क़ुरैशी जो भारत के पूर्व चुनाव आयुक्त रहे हैं, और लंबे समय तक प्रशासनिक सेवा से जुड़े रहे हैं, उनकी किताब जनसंख्या का मिथक का संदर्भ इस्लाम, परिवार नियोजन और भारत में राजनीति है। बढ़ती हुई जनसंख्या किसी भी देश के लिए शक्ति न होकर समस्या है, और आज़ादी के बाद भारत में सभी समुदायों की जनसंख्या निरंतर बढ़ी है, जबकि मुस्लिम समुदाय की संख्या कम दर से बढ़ी है। फिर भी इसे हम किसी धर्म, जाति या मज़हब के चश्मे से नहीं देख सकते। लेखक का निष्कर्ष है कि इसे 'हिंदू बनाम मुसलमान' की तरह नहीं, बल्कि दोनों समुदाय के साझा समस्या की तरह देखा जाना चाहिए। यह किताब न सिर्फ़ मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या और परिवार नियोजन के मुद्दे पर रोशनी डालती है, बल्कि दो मुख्य समुदायों के बीच राष्ट्रीय सहिष्णुता और समझ को भी बढ़ाती है।

जनसंख्या का मिथक : इस्लाम, परिवार नियोजन और भारत में राजनीति
एस.वाय. क़ुरैशी, अनुवाद : हरिमोहन मिश्र
सेतु प्रकाशन, नोएडा, उत्तर प्रदेश
मूल्य : ₹ 399, पृष्ठ : 368

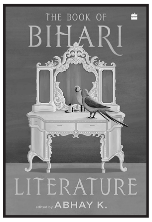

प्राचीन काल से बिहार को महान साम्राज्य और राजशाही की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। गणित, ज्योतिषशास्त्र, दर्शनशास्त्र, विज्ञान और राजनय के साथ साहित्य के क्षेत्र में भी बिहार ने असाधारण कृतियों के साथ योगदान दिया है। द बुक ऑफ़ बिहारी लिटरेचर चुनिंदा कवियों, चिंतकों और लेखकों की अनूदित रचनाओं का एक जीवंत संचयन है। मुत्ता, सुमंगलमाता, विद्यापति, सरहपा से लेकर बेनीपुरी, दिनकर और आज के समय में लिख रहे अमिताव कुमार और कविता तक कुल इकसठ साहित्यकारों की रचनाएँ यहाँ शामिल की गई हैं। सबसे ख़ास बात, बिहारी बोलियों की भी ख़ास रचनाएँ पहली बार अनुवाद के बाद प्रकाशित हुई हैं। इस किताब के संपादक का कहना है कि ऐसे और संचयन की आवश्यकता है, यह बिहारी लिटरेचर को बड़े फ़लक पर लाने का एक छोटा प्रयास-भर है।

द बुक ऑफ़ बिहारी लिटरेचर
संपादकः अभय के.
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया, गुरुग्राम, हरियाणा
मूल्य : ₹ 699, पृष्ठ : 404

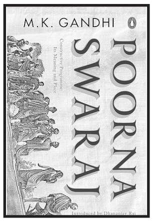

पेंग्विन रेंडम हाउस ने अपने विंटेज सीरीज में एम.के. गांधी के पूर्ण स्वराज : कंसट्रक्टिव प्रोग्राम : इट्स मीनिंग ऐंड प्लेस को युवा राजनीतिक विज्ञानी धनंजय राय के प्रस्तावना और पुनश्च के साथ प्रकाशित किया है। महात्मा गांधी ने पूर्ण स्वराज के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समय-समय पर कांग्रेस के सामने रचनात्मक कार्यक्रम : उसका रहस्य और स्थान के ड्राफ़्ट को रखा। 1945 के अंतिम ड्राफ़्ट 1941 के पहले ड्राफ़्ट से काफ़ी भिन्न है। कंसट्रक्टिव प्रोग्राम : इट्स मीनिंग ऐंड प्लेस के फ़ारवर्ड लिखते हुए गांधी कहते हैं यह पूरी तरह सुधारी हुई आवृत्ति है।उन्होंने इसे कंसट्रक्टिव प्रोग्राम नाम इसलिए दिया था कि वे साफ़-साफ़ देख रहे थे, इसके बिना स्वतंत्रता मिलना मुश्किल है। गांधीजी ने अंतिम रूप से कंसट्रक्टिव प्रोग्राम में इन विषयों को रखा था – क़ौमी एकता, अस्पृश्यता निवारण, नशाबंदी, खादी, अन्य ग्रामोद्योग, ग्राम स्वच्छता, नयी तालीम, प्रौढ़ शिक्षण, महिलाएँ, स्वास्थ्य नियमों का शिक्षण, प्रांतीय भाषाएँ, राष्ट्रभाषा, आर्थिक समानता, किसान, मज़दूर, आदिवासी, रक्तपित्त के रोगी और विद्यार्थी।

पूर्ण स्वराज : कंसट्रक्टिव प्रोग्राम : इट्स मीनिंग ऐंड प्लेस
धनंजय राय
पेंग्विन रेंडम हाउस, नई दिल्ली
मूल्य : ₹ 599, पृष्ठ : 220

प्रोची एन मेहता की *हू इज़ ए पारसी?* किताब में भारत में बसे पारसी अल्पसंख्यक समुदाय के भीतर चल रहे रूढ़िवादी और सुधारवादी समूहों के बीच के संघर्ष को सामने लाती हैं। विसंगतियों की चर्चा करते हुए कहती हैं कि सुधारवादी समूह पारसी धर्म या ज़रथुष्ट्रवाद के मूल

23Manoj Mohan_Layout 1 08-02-2024 18:48 Page 481

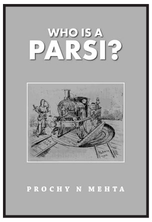

को माज़दायस्ना में मानते हैं। वास्तव में यहीं से रूढ़िवादिता को प्रश्रय मिलता है। जबकि इसी समुदाय के उच्च धर्मगुरु तथा प्रभावशाली सदस्यों के द्वारा संचालित यह एक सुधारवादी आंदोलन था। गोकि आज पारसियों की घटती संख्या चिंता का विषय बनी हुई है, यह अपने अस्तित्व में बना रहेगा, पारसियों की 'अदम्य भावना' को आसानी से नकारा नहीं जा सकता। इस बेहतरीन अध्ययन की लेखिका स्वयं पारसी समुदाय से आती हैं, और अपने समय की एक सफल खिलाड़ी भी रही हैं।

हू इज़ ए पारसी?
प्रोची एन मेहता
नियोगी बुक्स, नयी दिल्ली
मूल्य : ₹ 795, पृष्ठ : 488.

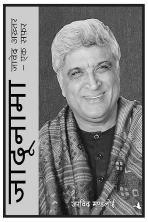

जावेद अख़्तर को लोग प्यार से जादू कहते हैं। उन्हीं पर केंद्रित जादूनामा किताब है, जिसमें उनके जीवन के अनोखे अफ़साने को दर्ज किया गया है। वे पहले एक संवाद लेखक के बतौर चर्चित हुए, फिर वे गीत लिखने लगे, उनके राजनीति विचार को भी तरजीह दिया गया। इन सबसे अलग शुरू से लेकर अभी तक लोगों के दिलों में उनकी छवि एक शायर की महदूद है। उनके जीवन की ये सारी छवियाँ इस किताब से पुख्ता होती हैं। उनके वालिद जाँ निसार अख़्तर की पंक्तियाँ हैं–'लम्हा, लम्हा किसी जादू का फ़साना होगा', जादूनामा में वही जादू का फ़साना है। ज़िंदगी में लंबा सफ़र तय करने और कामयाबी की हर मंज़िल हासिल करने के बावजूद उनका दृढ़ विश्वास है जिसे वे अपने शायराना मिज़ाज में कहते हैं कि जहाँ कोई पहुँच गया है, वह किसी की मंज़िल नहीं हो सकती।

जादूनामा : जावेद अख़्तर–एक सफ़र
अरविंद मण्डलोई
मंजुल पब्लिशिंग हाउस, नोएडा, उत्तर प्रदेश
मूल्य : ₹ 1999, पृष्ठ : 380

और दो पत्रिकाएं भी

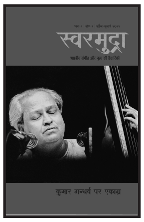

अशोक वाजपेयी के प्रधान संपादकत्व में स्वरमुद्रा : शास्त्रीय संगीत और नृत्य की वैचारिकी का कुमार गन्धर्व पर एकाग्र अंक दो जिल्दों में आया है। यह कुमार गंधर्व के शतवार्षिकी वर्ष के अवसर पर है। लगभग बारह सौ पृष्ठों को समेटती यह पत्रिका एक विराट व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को समेट ले जाती है। शुरू में ही अशोक वाजपेयी कुमार गंधर्व के बारे में कहते हैं कि स्वयं भौतिक रूप से कठिन जीवन संघर्ष में फँसे कुमार जी के लिए संगीत लगभग शब्दशः जिजीविषा था। वे जीने के लिए गाते थे और गाने के लिए जीते थे। वे अपने जीवन में मृत्यु के बहुत नजदीक पहुँचे थे। इसलिए उनका बाद का संगीत नश्वरता और काल की छाया में रचा-गया संगीत है। स्वरमुद्रा के दो जिल्दों के सात खंड हैं, पहले खंड में कुमार गंधर्व के लिखे को स्थान दिया गया है। इन लेखों से शास्त्रीय संगीत का एक आधुनिक परिदृश्य उभरता है। वे मानते थे कि शास्त्रीय संगीत के अनुशासन की सीमा के बाहर लोक संगठन का एक अद्भुत संसार है। वे यह भी मानते थे कि हमारे शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति इसी लोक संगीत से हुई। लोगों ने लोकगीतों के साहित्यिक पक्ष पर भले ध्यान दिया हो, लेकिन सांगीतिक पक्ष पर उपेक्षा ही बरती। अभिजात कलावती शीर्षक लेख लता मंगेशकर पर है, जो लोग छह सौ पृष्ठों में भी स्वर-सम्राज्ञी पर क़ायदे की बात नहीं कर पाते, उनपर कुमार जी ने महज सात पृष्ठों में कह डाली है। लता जी के बारे में वे लिखते हैं कि उनका तीन-साढ़े तीन मिनट का एक गीत और किसी ख़ानदानी शास्त्रीय गायक द्वारा प्रस्तुत तीन-साढ़े तीन घंटों की महफ़िल, इन दोनों का कलात्मक और आनंदात्मक मूल्य एक जितना है। वे शास्त्रीय गायन में रंजकता के विरोधी नहीं थे, उसका सरस होना ज़रूरी मानते थे। इस अंक कि सामग्री को देखकर लगता है हिंदी से भी ज़्यादा उन पर मराठी में लिखा गया है। कुमार जी की जीवनसंगिनी वसुंधरा कोमकली बकुल के फूल के बारे में लिखते हुए कुमार जी के स्वभाव के एक महत्त्वपूर्ण पहलू का ज़िक्र कर जाती हैं। मेरे फूल ताज़ा थे, कुछ में मिट्टी लगी थी, मैंने सबको धो भी दिया था, लेकिन कुछ फूलों के किनारों में हलकी-सी कुम्हलाहट थी, जिससे

उनका रंग थोड़ा-सा तांबई हो गया था, जबकि कुमार का हर फूल इस सिरे से लेकर उस सिरे तक एकदम सफ़ेद था। उन्होंने फूल ही ऐसे चुने थे। वसुंधरा ताई के इन शब्दों में कुमार जी का पूरा व्यक्तित्व स्पष्ट हो जाता है। पीयूष दईया ने सुरुचि और कल्पनाशीलता के साथ स्वर मुद्रा के इस अंक का संपादन किया है। साठ साल से भी ज़्यादा के समय में कुमार जी के बकुल के सफ़ेद फूल चुनने के स्वभाव के अनुरूप पीयूष दईया ने इस अंक के लिए लेख जुटाए हैं।

स्वरमुद्रा : कुमार गंधर्व पर एकाग्र, भाग-2 | अंक -1 | अप्रैल-जुलाई 2023
स्वरमुद्रा : कुमार गंधर्व पर एकाग्र, भाग-3 | अंक -2 | अगस्त-नवंबर 2023
प्रधान संपादक : अशोक वाजपेयी
संपादक : पीयूष दईया
रज़ा फ़ाउंडेशन, नयी दिल्ली
मूल्य : ₹ 200+200, पृष्ठ : 560+576

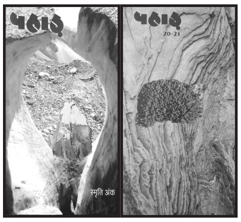

प्रसिद्ध लेखक और पर्यावरणविद प्रोफ़ेसर शेखर पाठक के संपादन में निकले पहाड़ के स्मृति अंक : एक और दो को पढ़ते हुए कोई भी व्यक्ति उदास हो जा सकता है कि पिछले आठ वर्षों (2015-2022) में हमने कितने मूर्धन्यों को समय-असमय इस दुनिया से जाते हुए देखा। वीरेन डंगवाल की मौत का कारण कैंसर था तो मंगलेश डबराल कोरोना से गए। दिवंगत हुए लोगों में ऐसे कवि, लेखक, विमर्शकार, और समाज-चिंतक शामिल हैं जो हमें ज्ञान-समृद्ध कर ही रहे थे, और हमारे बौद्धिक पर्यावरण के लिए ज़रूरी प्रकाश-पुंज की तरह थे। ऐसे व्यक्तित्वों के चले जाने से रिक्तता-बोध गहरा हो रहता है। पहाड़ स्मृति अंक : एक के संपादकीय में शेखर पाठक लिखते हैं कि स्मृति सिर्फ़ नॉस्टैल्जिया नहीं है, न ही हमारे बीच से जा चुके लोगों को सिर्फ़ विदा की सलामी है। न यह औपचा-रिकता है और न आरोपित कोशिश। स्मृति अपने आपको, अपने समूह और साथियों को और अन्ततः अपनी जड़ों को जानना है। वहीं जब वे स्मृति अंक : दो को मूर्त रूप देने लगे तो कोरोना जैसी महामारी आ चुकी थी। कोरोना ने ऐसा तांडव नृत्य किया कि सरकार भी आधारकार्ड के बावजूद दिवंगतों की संख्या नहीं बतला पाई। लेकिन शेखर पाठक ने इन दोनों अंकों में हमारे बीच से उठ गए लगभग डेढ़ सौ अहम व्यक्तित्वों को बीस उपशीर्षकों में बाँटकर उनकी उपलब्धियों पर विशिष्ट लेखकों से लिखवाया है। समाज से जुड़े सभी क्षेत्रों के दिवंगतों को समान रूप से तरजीह दी। बुद्धिचेता खंड में महाश्वेता देवी, नारायण देसाई, रामदयाल मुंडा से लेकर दाभोलकर, पानसरे, कलबुर्गी और गौरी लंकेश जैसे व्यक्तित्व हैं। यहाँ सिर्फ़ भारतीय ही नहीं हैं बल्कि स्टीफ़न हॉकिंग जैसे भौतिकविज्ञानी और एलिज़ा बेथ ब्रूनर जैसे पश्चिम के कलाकार भी स्मृति-शेष व्यक्तित्वों में शामिल हैं। पहाड़ से जुड़े कलाकार हों या वैज्ञानिक, ऐक्टिविस्ट हों या साहित्यिक सभी को यहाँ याद किया गया है। पहाड़ के इन दो स्मृति अंकों को प्रकाशित कर दिवंगत व्यक्तित्वों की सामाजिक उपस्थिति और उनके अवदानों को पाठकों के समक्ष रखा गया है। ऐसे प्रयासों से ही हम दिवंगतों के कृतित्व और चिंतन को सामूहिक स्मृति की एक समृद्धकारी विरासत के रूप में देख पाते हैं, और इसलिए ये आयोजन ज़रूरी बन जाते हैं।

पहाड़ 20-21, स्मृति अंक : एक, और
पहाड़ 22-23, स्मृति अंक : दो
संपादक : शेखर पाठक
पहाड़ः परिक्रमा, नैनीताल, उत्तराखंड
मूल्य : ₹ 300, ₹ 350, पृष्ठ : 460, 480